श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्बोधन

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय,
जोधपुर का तृतीय दीक्षान्त समारोह

दिनांक 10 दिसम्बर, 2019 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

विश्वविद्यालय परिसर, जोधपुर

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी, माननीय चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद मंत्री डॉ. रघु शर्मा जी, माननीय चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग जी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर के निदेशक प्रो. शान्तनु चौधरी जी, कुलपति डॉ. अभिमन्यु कुमार जी, विभिन्न संकायों के अधिष्ठातागण, निदेशकगण, सिण्डीकेट और सीनेट के माननीय सदस्यगण, शिक्षकगण, विद्यार्थियों, उनके अभिभावकगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बंधुओं और छायाकार मित्रों।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह में शामिल होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। आरोग्य के क्षेत्र में कार्य करने वाले साधकस्वरूप सभी स्नातकों, अधिस्नातकों को आज उनके दीक्षान्त की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ। आप सभी से अपेक्षा करता हूँ कि समाज की स्वास्थ्य–सेवा में आप अपना अमूल्य योगदान देकर राष्ट्र को सबल–समर्थ बनायें।

आप सभी को मैंने 'साधक' माना है। आयुर्वेद सहित सभी प्रकार की आयुष–चिकित्सा के स्नातकों, अधिस्नातकों को अपने अध्ययन के साथ–साथ समाज के विभिन्न तबकों विशेषकर गरीब, दलित, शोषित वर्ग की आत्मा की आवाज को सुनने, समझने और संवेदनशील बनने की साधना भी करनी होती है। समाज के ये वर्ग महंगी चिकित्सा प्राप्त करने की स्थिति में नहीं होते हैं और वे आप से बड़ी उम्मीद रखते हैं।

आयुर्वेद एक सम्पूर्ण जीवन विज्ञान है, जो जीवन के सभी पक्षों और गतिविधियों को छूता है। आयुर्वेद में पुरुषार्थ चतुष्ट्य (धर्म, अर्थ, कर्म, मोक्ष) को सार्थक ढंग से प्राप्त करने का वर्णन उपलब्ध है। आयुर्वेद में वर्णित दिनचर्या, रात्रिचर्या व ऋतुचर्या का आदर्श व्यवहार व्यक्ति के स्वास्थ्य संरक्षण में मुख्य भूमिका अदा करता है। आयुर्वेद हमें सद्वृत्त सिखाता है, जो सदाचरण के द्वारा व्यक्ति को मानसिक बौद्धिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रदान करता है।

आयुर्वेद ऐसा स्वास्थ्य–विज्ञान है जो सबसे पहले स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य संरक्षण पर जोर देता है ताकि कोई व्यक्ति बीमार ही न पड़े। विश्व की सर्वाधिक प्राचीन स्वास्थ्य विज्ञान 'आयुर्वेद' भारत की एक अनुपम धरोहर है। यह मानव–कल्याण को समर्पित है।

मानव–कल्याण की भावना से ही हजारों वर्ष पूर्व भारत के चिकित्सा वैज्ञानिक ऋषि–महर्षियों ने विश्व की महानतम समृद्ध भाषा संस्कृत में आयुर्वेद की लिपिबद्ध रचना की, जो विभिन्न काल–खण्डों की चुनौतियों का सामना करते हुए वैज्ञानिक कसौटियों पर खरी सिद्ध हुई है।

आयुर्वेद मानव मात्र को प्राकृतिक सिद्धान्तों पर निरापद रूप से स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर रही है। आयुर्वेद का संस्कृत भाषा में विद्यमान होना, इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। संस्कृत, संस्कार प्रदान करती है। आयुर्वेद ऐसी चिकित्सा–पद्धति है, जो सम्पूर्ण विश्व–समाज के स्वस्थ रहने की कामना 'सर्वे सन्तु निरामयाः' तथा 'मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्' इत्यादि मंत्रों से करती है।

आयुर्वेद की प्रत्येक प्राचीन संहिता का प्रत्येक मंत्र स्वास्थ्य–शिक्षा के साथ–साथ अच्छा इन्सान बनने, अच्छे आचार–विचार रखने, पर्यावरण की सुरक्षा एवं उसके प्रति सम्मान की भावना रखने और विश्व शान्ति के साथ–साथ मानव जीवन के कल्याण की बात कहता है। आयुर्वेद से प्राप्त ये सभी शिक्षाएँ आप अपने केरियर में, आप अपने दिल में महसूस करते हुए समाज की सेवा करना, तब ही आप लोग अपनी संस्था और विज्ञान के ऋण से मुक्त हो पाओगे।

आयुर्वेद में चिकित्सा–कार्य के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुये एक सुन्दर उक्ति लिखी हुई है कि चिकित्सा सेवा कभी निष्फल नहीं जाती (चिकित्सा नास्ति निष्फला) अर्थात् चिकित्सा–कार्य करते हुये चिकित्सक को धन–धान्य प्राप्त होता है। यश प्राप्त होता है। गरीब की सेवा करने पर पुण्य भी साथ में प्राप्त होता है। गरीब की दुआ से चिकित्सक का कल्याण होता है।

दुर्भाग्य से चिकित्सा का सेवा–कार्य आज पश्चिम देशों की तर्ज पर व्यवसाय का रूप लेता जा रहा है। मेडिकल की शिक्षा प्राप्त करना आम–नागरिक के बस की बात नहीं रही है। इसलिये ऐसा वातावरण बनता जा रहा है कि डॉक्टर बनने के बाद इस बड़े खर्च की राशि को पुनः अन्धाधुन्ध तरीके से कमाना है। यह स्थिति मानवता को कई तरह से नुकसान पहुँचाती है।

चिकित्सक अपने हृदय में सेवा की सकारात्मक और संवेदनशीलता की भावना के साथ समाज की स्वास्थ्य सेवा करें। ये सभी गुण ईश्वरीय लक्षण है, जो चिकित्सक को समाज में भगवान का दर्जा दिलाते हैं।

आयुर्वेद की कई औषधियाँ रसोईघर में उपलब्ध होती हैं, जो घरेलू नुस्खों के रूप में भारत के जन–जन में लोकप्रिय है। विश्व के विभिन्न देशों में आयुर्वेद की जड़ी–बूटियों पर शोध हो रहा है और वे कैंसर, डायबिटीज जैसी जटिल बीमारियों में कारगर सिद्ध हुई हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी ध्यान भारतीय चिकित्सा की आयुष पद्धतियों पर गया है। भारतीय ज्ञान चाहे वो आध्यात्म हो, योग हो या आयुर्वेद हो, विश्व में सभी जगह सम्मान प्राप्त कर रहा है। आप सभी आयुष पद्धतियों के साधकों का आह्वान करता हूँ कि आज के समय की आवश्यकता को समझते हुए, समर्पण के साथ से भारतीय समाज को स्वस्थ और सबल बनाने में अपना योगदान दें। इन प्रयासों से भारत विश्व शक्ति बनने के साथ–साथ विश्वगुरु बनने में भी समर्थ हो सकेगा।

देश के द्वितीय एवं अपनी तरह के पहले आयुर्वेद विश्वविद्यालय की राज्य में स्थापना होने के बाद आयुर्वेद और आयुष पद्धतियों के विकास के अवसर बढ़े हैं। शिक्षण–व्यवस्था में सुधार हुआ है। श्रेष्ठ आयुष–चिकित्सकों का निर्माण हो रहा है। नियुक्तियों सहित बहुत से कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुये हैं। विश्वविद्यालय भी तेजी से स्नातक से स्नातकोत्तर स्तर पर नये आयाम स्थापित कर रहा है।

विश्वविद्यालय के माध्यम से आयुर्वेद की लोकप्रिय विधाओं जैसे– पंचकर्म, क्षारकर्म, योग इत्यादि की विशिष्ट सेवाओं से सम्पूर्ण समाज लाभान्वित हो रहा है। हाल ही में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं विगत राष्ट्रीय कार्यशालाओं के आयोजन से विश्वविद्यालय देश–विदेश में आयुर्वेद के एक विशिष्ट शिक्षण केन्द्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। इन सब के लिए यहां के विद्वान् शिक्षक एवं प्रशासन बधाई के पात्र है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने योजना के अनुरूप विश्वविद्यालय को श्रेष्ठ शिक्षण और अनुसन्धान के लिए एक केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठापित करें।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है। हमारा मूल ग्रन्थ है। संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं।

संविधान के अनुच्छेद 51 क में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को आप लोग आचरण में लाकर आगे बढ़ें। यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने में और स्वयं के जीवन को भी प्रोनन्त करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सामाजिक समरसता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा।

मैं चाहता हूं कि विश्वविद्यालयों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। देश की युवा पीढी को मूल कर्त्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 51 क पर विचार–विमर्श करने के लिए गोष्ठियां व सेमीनार आयोजित की जायें।

आज के इस अवसर पर मैं आयुर्वेद विश्वविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामना करता हूँ। अध्ययन में श्रेष्ठ प्रदर्शन करके स्वर्ण पदक प्राप्त विजेताओं को बधाई देता हूँ। विश्वविद्यालय परिवार को बधाई के साथ–साथ विश्वविद्यालय को और अधिक ऊँचाइयों तक ले जाने के लिये उत्साहपूर्वक प्रयत्न करते रहने की शुभकामना करता हूँ। आप सभी को पुनः बधाई देता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।